सक्रिय सहयोग की प्रतिश्रुति

डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र

'मीडिया मीमांसा' का तीसरा अंक मिला। गहरी रुचि के साथ पूरी पत्रिका देख गया। इतनी छोटी कालावधि में पत्रिका ने वह समृद्धि अर्जित कर ली है जिसकी आपके संपादन से अपेक्षा रहती है। यह अंक पूर्ववर्ती अंकों से निःसंदेह समृद्ध है। आजाद देश की पत्रकारिता की ऐसी गहरी और बहुकोणीय पड़ताल विचार-लोक को उत्तेजित ही नहीं, आश्वस्त भी करती है। मूल्यवान आश्वासन यह कि मीडिया से सक्रिय रूप में जुड़े लोग वर्तमान संकट और चुनौतियों के प्रति ही जागरूक नहीं है, अपने धर्म के मर्म को भी समझते हैं, इसलिये अपने दायित्व की गुरुता की उन्हें सटीक पहचान है। चुनौतियों से आतंकित नहीं, अपने संसाधन, व्यक्तित्व और विवेक-बल से वह आबो हवा रचने में सक्रिय हैं, जो असाध्य लगती घिनौनी चुनौतियों का माकूल जवाब दे सके। आज के संकट और सघन तमस के सटीक उपचार के लिये रचनात्म विचार प्रस्तुत कर आपने उज्जवल संभावना का संकेत दिया है, जो विधायक विकल्प के प्रति आश्वस्त करता है। सीमित अर्थ में तिलक-गांधी पत्रकार-संपादक हों या न हों, पर उन्हीं के व्यक्तित्व को विकल्प के रूप में स्मरण करना विधायक-विचार का प्रमाण माना जायेगा। उन मूल्यों की आवृत्ति जरूरी है, जिसने जातीय पहचान को मरने-मिटने से बचाया। आप द्वारा परिवेशित-विचार-सामग्री इसी ओर सबल संकेत करती है। ऐसी महत्वपूर्ण पत्रिका के प्रकाशन-संपादन के लिये आपको औपचारिक बधाई न देकर सक्रिय सहयोग की प्रतिश्रुति देता हूँ।

– डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, कोलकाता

पढ़ने और मनन योग्य सामग्री

श्री नारायण दत्त

डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक ने (संपादक के नाम पत्र, जनवरी-मार्च अंक में) यह बात बिलकुल सही लिखी है कि हिन्दी संस्कृत की सगी बेटी नहीं है, वह अपभ्रंश से निकली है। मुझे 'बेटी' के बजाय 'दोहती' लिखना चाहिए था। मेरे लेख में डॉ. पाठक को भारतेन्दु हरिश्चंद्र के भावों की प्रतिध्वनि सुनाई दी, उसे मैं अपने लिए गौरव की बात समझता हूं। अंक के दोनों खण्डों में पढ़ने और मनन करने योग्य भरपूर सामग्री है। बधाई!

– नारायण दत्त, बेंगलूरु

Media Meemansa is publishing high quality of reading material for the journalists and common readers. I do hope the high standard of the magazine shall be kept up.

Justice D.M. Dharmadhikari
(Former Judge, Supreme Court of India)
Chairperson, M.P. Human Rights Commission

I really like the title MEDIA MEEMANSA very much. It is very nice that thoughts from some of the leading luminaries like Kuldip Nayar have been included in the journal. It would be a challenge to keep such articles in every issue but I am sure you and your colleagues are very able and wellsuited to making it happen.

Prof. (Dr.) K. Sriramesh
Till recently Associate Professor,
Communication & Information
Nanyang Technological University, Singapore

The journal is well produced and it has lot of reading material. The series on the Great Media Houses and the Great Editors will, I am sure, be welcomed by journalists - veterans, upcoming and students.

A.J. Philip
Senior Associate Editor
The Tribune

The magazine is quite informative and educative as far as Indian media is concerned. Significant about this issue (Jan.-Mar. 2008) is it gives a glimpse of historical perspective of Indian media and recalls the valuable contributions of eminent media personalities right from the days of freedom struggle. It a rare learning opportunity to the present day generation. The articles, both in English and Hindi, are of good quality.

Prof. K.N. Krishnakumar
Indian Institute of Forest Management, Bhopal